

100

卷之四

[illegible][illegible]

The image shows a page from an old manuscript, likely in Devanagari script. The text is arranged in two columns, with the right column being more legible than the left. The paper is heavily aged, showing significant discoloration and wear. The text is written in a dark ink, but it is very faded and blurry, making it difficult to read. There are some red markings or lines on the page, possibly indicating a section break or a heading. The overall appearance is that of a historical document that has been preserved for a long time.

नाग
मकु

नाग
मकु

नाग
मकु

ॐ श्री हनुमन् नमः ॥ नागमन्त्र चर्चा पत्र २ ॥ अकिनि जात्र संघ नं हट्टः
स्वाहा ॥ नागयूजा मकु ॥ ॐ हनुमन् ॥ मिलि २ स्वाहा ॥ नागपत्र स्वायम्
कु ॥ ॥ ॐ नमः त्रययाय ॥ ॐ नमः त्रययाय महाजद सनापताय
वध २ हनुमन् काननू पिनि स्वाहा ॥ नागनयाय वल स क साग्न गथि वि
य मकु ॥ ॥ ॐ वनू नागनाय ॥ ॐ हनुमन् विषय वर्याय वर्याय वर्याय
ॐ हनुमन् स्वाहा ॥ आकर्षण मकु ॥ ॥

(नागपत्र स्वायम् ४ ॥

॥ श्री हनुमन् ॥



स्वर्गिण्यनयाय ॥ ॥ धनत्रिवाय ॥ गुनमधुन यथाग
 य ॥ सिधुता गुनमधुविसर्जन ॥ समाधि कुमाधिवास
 निनाऊनाययन्यास ॥ ॥ धनत्रि वननद्ध उ प्रमद्वन
 नवनागपुस खानद्वहाग ॥ हावनी ॥ धय ॥ निनाऊने
 लाहाग्निनका ॥ यज्ञा यगा सिधु जजम खान दाकि

॥ ययन्यास ॥ अर्थयाय न दद ताय अ कुप ॥ इर्नका ॥
 धनदा ॥ अर्थमर्मा ॥ धूयदिये उप (ध) वेयानि ॥ नादाम
 त ॥ यदाकि स यक्षमय द्वाय ॥ ॥ धनत्रिडा जल
 क्षमयाय ॥ कापस नंरु वायनथदा ॥ धिसस्मान द्वा
 नरु ॥ दिगविदिग ॥ उर्थग ॥ हावना ॥ द्वागुत्रिश्चनय ॥

धूय निनाजेन ॥ गानवा मतरु ॥ पूजामडा गथं ॥ पूजा
साधन कस्मिन्वाक् ॥ अङ्गुलवात्र ॥ आवाहनय ॥ मन्त्र
अङ्गुलनहाने धननि अर्घ्याय ॥ दिगविदिगउथं ॥
पूजामन्त्र पूष्यन्यास वनियुजा कदाचदेव निसद्वाय
धन कस्मिन् साधन दा यवामृत यश्च गन्ध ॥ धनं ज

जनकामस ॥ यश्च विदिह कंठक मवता ममात्र ॥ ज
लकाम कायनास अर्घ्याय ॥ इर्वा कलु अङ्गुल गाय
धनितयाज ॥ अर्घ्य ॥ हितिरुनसा स्नान वृक्षाप्रता ॥ सं
द्रफ पतिष्ठा ॥ लावना ॥ धूय निनाजेन लाहानि नञ्
॥ लावना ॥ स्नानयाय यवामृत यश्च गन्ध चतुर्भिः

दिविकनक ॥ रुक्मपूजा मन्त्रार्थ ॥ श्रुति उतिष्ठाता वः
 ना ॥ पथरूपकानरुतिरु विद्या ॥ वज्रदा रुक्मपूजा नमा
 भाद्रादा ॥ उपमनुयाय १०८ मरुश्च ॥ ॐ ॐ ॐ वज्रिगव
 रुद्र तिष्ठ ॐ ॐ ॐ स्वाहा ॥ यधर्मा पतिश्च रुक्मपाय नय
 स्त्वन मानाते ॥ श्रुति कनमिरुता पूजा ॥ धिरात्र युनका

५ वि १

डा ॥ सगात्र ॥ धन मरु वरिंय ॥ मरुत्रधि ॥ सानः
 गानः ॥ रुक्मपूजा ॥ आतिवाद ॥ विसर्जन ॥ यज्जहाय ॥
 वरुनका ॥ तयक ॥ वरिंय ॥ ॥ ॥ ॥

रुक्मपाय नमा पतिश्च रुक्मपाय नय रुद्र तिष्ठ ॐ ॐ ॐ स्वाहा यधर्मा पतिश्च रुक्मपाय नय स्त्वन मानाते श्रुति कनमिरुता पूजा धिरात्र युनका

१० नमः श्री वज्रसत्वाय ॥ आक्षेपे नमः प्रकृता ॥ ॥
 जी समाधिः कुम्भाधिवासनश्चनलिः जत्रयवगुल्लोपि
 म्वायनं व्याहृतयत्र वाय दिगविदिग म्हावकुंथमय
 नंयंगय ॥ ॥ धनरावना ॥ अटिति शूच्यतानं तत्र कुंज
 ४ वक्रनिष्ठानं लावना समायनं वनावना ४ यत्रिभभन

मागधुजाविधि ॥

१ लं ३ २ दक्षिण कनन खप्रक्षेत्री ५ २ प्रक्षेत्री ५
 वज्रवतूलस्तुटिकमयं सच्चो गभीतं मनूष्यास्यं सफदि
 हृत्तविदधितं द्विरुजं वा मकनूषगया सधानीति श्री
 तं वक्रं लं समायनं सति नं सवृत्तं वनधेन नोलेन धेन
 सध्याकारं समयसर्वाहिलाय ॥ तस्मिंस्त्रे दृष्टिजनस्मि
 मायनं हान सत्वाद्यादिदानयून ४ सनं विहाया ॥

५ ल ३

२ सनं वनद कामन वृक्षय पुष्पवना ५

ध्याय श्रीरवतु कलि ॥ अर्घ्याय ॥ यथासा ॥ पञ्चय
 नयजा ॥ अर्घ्याय ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥
 वज्रसमय सुखमहाया पुत्राणि लिखिते ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
 वज्रसमय सुखमहाया पुत्राणि लिखिते ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
 वज्रसमय सुखमहाया पुत्राणि लिखिते ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

पूजा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥
 पूजा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥
 पूजा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥
 पूजा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥
 पूजा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥ यथासा ॥

ॐ ॥ ४ ॥ अन्नकाय ईं स्वाहा ॥ यज्ञा मनु ॥ ॐ ॥ अन्नकमहा नागस्य
यत्तय ॐ ॥ अन्नदियेयुक्त नमी जस्य पूर २ वषा यय २ ईं नुं ईं स्वाहा
॥ यत्तां यं ॥ ॥ यत्तां ॥ ॥ दक्षिण ॥ ॥ यत्तां ॥ लीदिकम
यत्तां वत्तां जर्न ॥ भीयं ॥ सकरुता ॥ ईं दन्द मना नर्स निरुं ॥ द्वि
जक मयं ॥ ईं तां जलिनां ॥ नाह नय ॥ उजगा कोन ॥ उपनि ॥ मनयं

पलकिस २

समयसत्त्वं तत्समय रूप न ॥ अर्घादिकं दत्त्वा ॥ तमेव त्रिभुवि गय
ता ॥ ॥ ध्येय ॥ नैकिं ॥ तिवा ॥ यत्तां दियुता ॥ ॐ ॥ पद्माय ईं न ईं स्वा
हा ॥ यज्ञा मनु ॥ ॐ ॥ ४ ॥ यद्माय नाग ॥ धिये तय ॐ ॥ ईं कय ज
यत्तां यय २ जम्बुदिय ॥ वषा यय २ ईं न ईं स्वाहा ॥ यत्तां यत्तां ॥ ॐ ॥
॥ २ ॥ ॥ यत्तां म ॥ तत्तां ॥ तां मयं ॥ नन्दा वही ॥ हर्कमि

नं सयकुरु ॐ कूं कूं मूं कूं द्वि युजं ॥ ७ कूं मूं कूं कूं गा जं लि नं ॥
नारु न ध ४ स प्या का नं उ य नि म न नूं यं ॥ स म य स त्वं वि हा च ॥
त त्स मं हूं न स त्वं ॥ अ र्घा दि कं कृ त्वा ॥ त न्ने ४ व त्रि नं वि रु य न् ॥
॥ धू य ॥ रि हूं सै ॥ सा य न् ॥ ॥ य र्घा दि क्ता ॥ ॐ अ ४ त क्क का ये
इ सा हा ॥ प ज्ञा म न्द ॥ ॐ त क्क क म हा ना ग धि य त य न् ॥
न कि २

x पू २

प ज ल य न य २ ज म्ब दि य व मा य य २ इ न इ सा हा ॥ यं सां र्घं
॥ ३ ॥ ॥ उ ल न्ना वा यु कि स य क र्छा न न्म म यं ॥ नि गू न मं
द्वि त भि नं ह नि गार् ॥ द्वि यु जं कूं मूं कूं कूं गा जं लि नं ॥ नारु न ध ४
स प्या का नं उ य नि म न नूं यं ॥ स म य स त्वं ॥ त त्स मं हूं न स त्वं ॥ अ र्घा दि
कं य न स त्वं कृ त्वा ॥ त न्ने व लि न वि रु य न् ॥ ॥ धू य ॥ कूं यं ॥
वा य १

वाक् ॥ यथादि यज्ञा ॥ उं आ ४ वा सु कि म ई सा हा ॥ यज्ञा म न ॥ उं
 आ ४ वा सु कि म हा ना ग म धि य न य न्दं कू य ज ल य न य २ ज म्ब दि य
 व म्ब य य २ न्दं न ई सा हा ॥ ४ ॥ आ ४ य ॥ ॥ स ई य यान् मि
 म क म र्ग स स्त्रिका क मी र्ग स क र्ग ली यित द्वि यु अ क म र्ग व क
 ता अ लि न ना ह न ध ४ य न्न ग कान् उ य न न न र्ग स म य स र्ग

लपक सं २

तत्स म र्ग ल न स र्ग ज र्ग दि य न स न कृ ता ग न् न वि वि त य न्
 ॥ व य् वी ने ॥ म्ब कू म ॥ यथादि यज्ञा ॥ उं आ ४ स ई य पा
 ना य ई सा हा ॥ यज्ञा म न् ॥ उं आ ४ म र्ग य यान् म हा ना ग धि
 पा य न्दं कू म्ब दि य ज न य न य न्दं य य २ न्दं न ई सा हा ॥ य
 ली र्ग म्ब ॥ ५ ॥ ॥ न्म र्ग ॥ क क्ता ट क कां म म र्ग

कमु४

सफरुल्लं ०००० नीनारु (ध्वतन स्वातियया इध्मात्रं द्विउज्जक
मूर्खकृता जलिनारु नध ४ उज्जं मकार्नी उय निमनूय समः
यसर्तु गत्तमय हान सत्वं अथादि कृत्वा गते व नि विरुयग
॥ धय ॥ नैये के यं ॥ हा य दाम् ॥ यथा दि य दाम् ॥ उ आ ४ क कौ
टकाय रु ॥ य दाम् ॥ उ आ ४ क कौ टकाय म हाना गम धि
५ उ आ ४ क कौ टका य दाम् ॥

पतय यना निजलमा नारुय २ ००० रुज्ज मृदिय कूपजल व पाः
यय २ ००० नै ००० हाहा ॥ य. सा. य. रु ॥ ६ ॥ ॥ वायु ॥ ॥
कृत्रिक लारु मय सफरुल्लं पिगत्रकन विगवल्फु ००००
कना ली द्विगकल्फु द्विउज्जक मूर्ख कृता जलिनारु नध ४
नगा उय निमनूय समय सत्वं गत्तमय हान सत्वं अथादि

कसहा

दिक्कृत्वा गते व विविहयग ॥ धूयं ॥ यथादि ॥ यथा
विप्रा ॥ ॐ आ ४ कृ विज्ञाय ई स्वाहा ॥ यथा मनु ॥ ॐ आ ४ कृ विज्ञ
ना गुप्ति य नय ॥ ॐ हं कृ य नय ॥ यथा मनु ॥ ॐ आ ४ कृ विज्ञ
न ई स्वाहा ॥ ॥ ॐ आ ४ कृ विज्ञाय ई स्वाहा ॥ यथा मनु ॥ ॐ आ ४ कृ विज्ञ
य न विद मि नं सफ र्त्वा कृ कृ वत् ॥ द्वि उ उ क म र्त्वा कृ ना ॥

२दि०

पृष्ठ २

अलि नारु न ४ ४ उग्र ४ उग्रान मन र्त्वा समय सत्त्वा गता मनु
न सत्त्वा यथा ॥ दिक्कृत्वा गते व विविहयग ॥ धूयं ॥ यथादि ॥ यथा
॥ यथादि ॥ यथादि ॥ ॐ आ ४ कृ विज्ञाय ई स्वाहा ॥ यथा मनु ॥ ॐ आ ४ कृ विज्ञ
मनु ॥ ॐ आ ४ कृ विज्ञाय ई स्वाहा ॥ यथा मनु ॥ ॐ आ ४ कृ विज्ञ
ऊग्र य नय ॥ यथा मनु ॥ ॐ आ ४ कृ विज्ञाय ई स्वाहा ॥ यथा मनु ॥ ॐ आ ४ कृ विज्ञ

३

॥ ८ ॥ ॥ तत्तावन्निजापय वासकनैहवाकाभन दकि
न वनदाहिनयवसार्य ॥ थन सैवस इद्र आद्र त नाय दः
क्षत्रहानतर्भ हायक ॥ वलि मक थ ॥ ॥ ॐ अनक वा धुकि
तद्रक क क्का टक यद्र महायद्र भिखपानं कुविक वनूनया
प्रदवति महादवति सामहिमिदधुधन महादधुधन अयः

अ
न
म
क
थ
॥

नात्र कूलश्च नदी यन च सागत्र महासागत्र अनयतक महा
= तफ श्री कान्ति महा कान्ति सलूप महा सलूप यदाहिकः
अमकस्य कृप यादस्य प निमित्तार्थ आनाम महादवः
सिनिश्महा (हेत्रिश् आग द्वा ग द्वा महा नाग भिपु तथा ॐ ॐ व
दानयत अमस्य कृप पादस्य पन निमित्तार्थ आयुष्मा

ना
=

संज्ञा॥ धातु न॥ दत्ति॥ विहि सात॥ विज धून ना॥ धातु
सि ज॥ यन्त्रिम॥ रहि क॥ विज कम ल॥ नद्र म॥ ने न॥
उरु न॥ विहि युवा॥ विज म न॥ धातु अ॥ अ॥ अ॥
विहि ल॥ विज क॥ धातु न॥ ने म॥ विहि
०० यु॥ विज ध॥ धातु नि॥ वायु न॥ विहि म॥

संज्ञा॥ विज वात धातु न॥ ०० मं॥ विहि का॥ न॥ विज म॥
धातु क॥ ल॥ ल॥ गुति॥ यथा म॥ हि ति॥ तुषि इ॥ न॥ र॥ निवा
न॥ का॥ या॥ स॥ त॥ य॥ क॥ स॥ सि॥ वा॥ क॥ न॥ ध॥ न॥ दा॥ ज॥ य॥ ति॥ क॥ या॥ घ॥ श॥ न॥
ध॥ नि॥ अ॥ स॥ सि॥ या॥ र॥ न॥ हि॥ ना॥ या॥ अ॥ ना॥ ग॥ य॥ म॥ द॥ ल॥ अ॥ र॥ ना॥ ग॥ वा॥
य॥ क॥ स॥ न॥ य॥ न॥ न॥ वि॥ व॥ त॥ या॥ अ॥ म॥ य॥ य॥ न॥ वा॥ न॥ न॥ दू॥ य॥ क॥
न॥ न॥ ग॥ र॥ वि॥ धा॥ न॥

[illegible]

नमो नमामिहि॥ ३ ॥ साक्षाद्वर्षमहायुं हाउरुत्तनरुषितं स्वप्न
यागधनवीनं पुतासन नमामिहि॥ ४ ॥ पात रुक्क कस्तुराहं
सन्नादरुमहावर्नं वीचन चयनं दवं मगभसन नमामिहि॥ ५ ॥
हृन्पानिपिभगं व उक्कवर्षमहायुं सदाकल्यानत्रिरुवः
गियूनाककनमामिहि॥ ६ ॥ उद्धवर्षपितवर्षी वयवर्षी

नमो नमो कमलपुष्पकस्तुतु. हं भा नरुनमामिहं ॥ २ ॥ नमो नमो
 अमृतपुष्पकस्तुतु. हं भा नरुनमामिहं ॥ ३ ॥ नमो नमो
 नमो नमो ॥ १० ॥ यिथिवि. कमलपुष्पकस्तुतु. हं भा नरुनमामिहं ॥ ११ ॥ ततः
 नमो नमो ॥ यिथिवि. कमलपुष्पकस्तुतु. हं भा नरुनमामिहं ॥ १२ ॥ ततः
 नमो नमो ॥ यिथिवि. कमलपुष्पकस्तुतु. हं भा नरुनमामिहं ॥ १३ ॥ ततः
 नमो नमो ॥ यिथिवि. कमलपुष्पकस्तुतु. हं भा नरुनमामिहं ॥ १४ ॥ ततः
 नमो नमो ॥ यिथिवि. कमलपुष्पकस्तुतु. हं भा नरुनमामिहं ॥ १५ ॥ ततः

कक. कक. कक. यप्र. महायप्र. म. म. यान. कतीक. वन. ल. यान. द.
 ती. महा. द. व. ति. सो. म. सि. नि. महा. सि. नि. दं. पु. ध. न. महा. द. पु. ध. न.
 अ. य. न. न. दू. न. न. न. य. न. न. द. सा. ग. न. महा. सा. ग. न. अ. न. व. न. य. न.
 यो. का. नि. महा. को. नि. सू. न. य. महा. सू. न. य. ग. जा. ही. क. महा. द. न. सि.
 नि. महा. सि. नि. रु. महा. धि. य. त. य. य. य. नी. क. य. आ. ग. त. य. आ. ना.

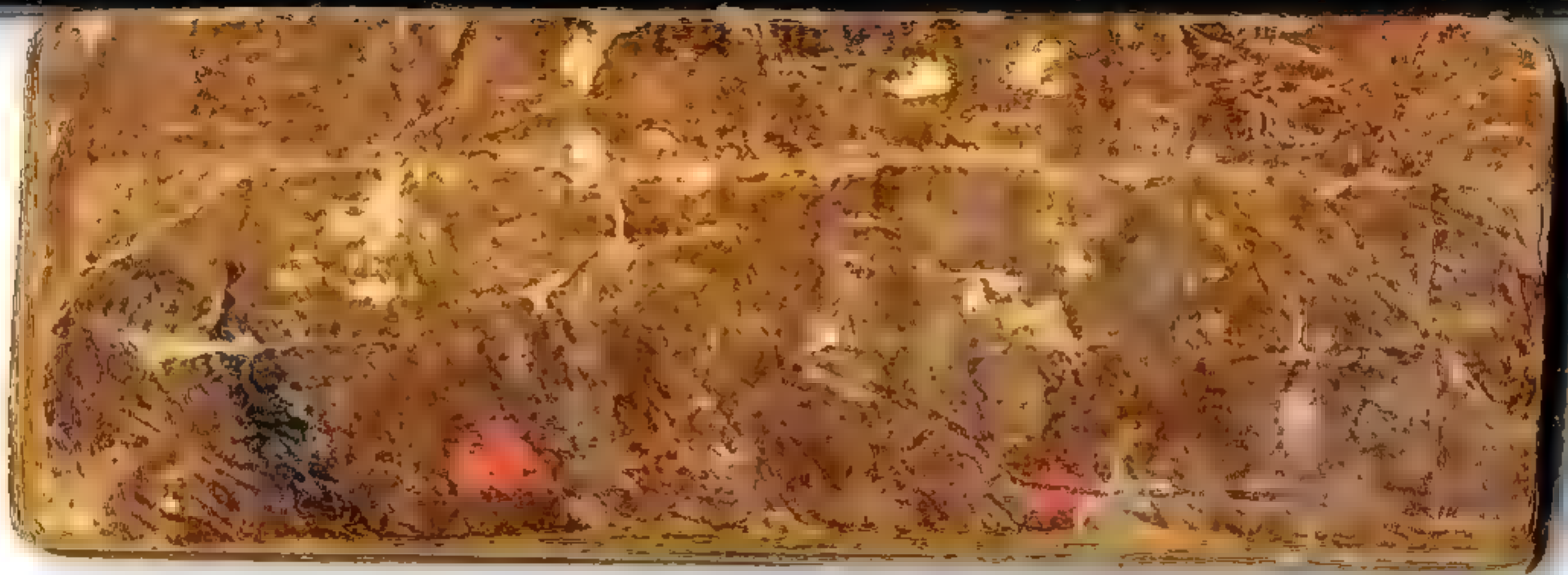
कृत्वा संप्रस्थानं ब्रह्मदीपांशं वनं धनं पुष्टं कनमहावि
पतयन् हं जन्मदियं यनादी ताये मगद्वरुणवत् ॥ **मन्त्रः**
ॐ ध्यानिनामः ॥ ॥ तकिनामः ३ तकिनामः ॥ ३ वः
नृणां यय स्वाहा ॥ ३ भूतनाय स्वाहा ॥ ३ वायुकि स्वाहा ॥ ३

तद्रकाय स्वाहा ॥ ३ पुष्टाय स्वाहा ॥ ३ मदा पुष्टाय स्वाहा
॥ ३ सखयानाय स्वाहा ॥ ३ ककाय स्वाहा ॥ ३
कसीकाय स्वाहा ॥ **यैतां च म** ॥ वनं धनं दया नागना
जं स्वस्वदेववदस्ति ता सत्वास्थय सदा निर्यं वनं नमः
॥ सर्वतथागतकायविश्वधन स्वाहा ॥ सर्वं स्वन स्वाहा ॥ ३

25#

165 17 11
22 25

032 - 010



वज्रदण्डतर्क ॥ **कृतकनक** ॥ इन्द्रधनुष ॥ उं ख (७) ना हं
 ॥ **नमो नमो नमो नमो** ॥ उं वने धिय तय सर्व विद्युत् २॥
 लसिमा वीहि धधन ॥ उं ख (७) ना हं स्वाहा ॥ उं वने
 मुकुन कं कानैल ॥ वं रुद्र युमान ॥ मुकु वं विराय ॥
नमो नमो ॥ उं वज्र वरुनाय स्वाहा ॥ उं वा धिय फाय स्वाहा ॥ उं व
 वने सि

१ इव लो २ अवति पिलासि ३ वृत्ति
 जय ह्याय स्वाहा ॥ उं वज्र न काय स्वाहा ॥ उं वज्र क वनाय स्वा
 हा ॥ उं वज्र सरुमु का नाय स्वाहा ॥ उं अय ति रु ता य स्वा हा ॥
 वजा युक् स्वाहा ॥ ॥ सर्व पाय दहन वजाय सर्व पाय स्वाहा नाय
 उं वज्र पय स्वाहा ॥ वं वं ग य स्वाहा ॥ उं वज्र विद्याय स्वाहा ॥
 उं सच्चि धि वि य स्वाहा ॥ उं वज्र इमं न रु नाय स्वाहा ॥ उं व

१ गाय

१ हिउ

धनं नृणां

जना अय स्वाहा ॥ **उं** ॥ **मनमकुति** सकदा ॥
 वीही दय ॥ **मनमकुति** ॥ थन कुना इति याय ॥ मन का अ
 मुकु न्यास ॥ जाय ॥ उं व उ व नू लय ॥ **हृदय** दि य व पा य य
 ह न ह स्वाहा ॥ १०६ ॥ गता मन **अपि** ॥ **धनं नृणां** ॥
 धय निरा अ न ॥ मात्र क म न का अ ॥ यं ला य मु शा ज ना

धनं नृणां

२ आ इति विम

पति नांग ना जाय स्व स्र द व हि ग म स्था थ य स दा ती त्यं व नू ल
 व न न म कु ता ॥ **तथा** य व न वी दि द य ॥ **धनं नृणां** ॥ **इति वि**
म ॥ आ कृत ग द्ये ग य ला म् य व म न्ता ध र वा ना ण म न स
 कु आ इति विम ॥ उं व नू ल य हं व हं स्वाहा ॥ ध मु कु न ॥ ला र
 (म न्द नी व नू ल य म आ इति स्वाहा ॥ ॥ यं ला य मु शा ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

थनविहितिमहात्रसा तिश्रुवा म नयात दाविय ॥ यगि म्हा-
 इ नसा दानवियममान ॥ थनु गभन आगमस कदाउ काउ
 ॥ धयदाय मखनं खन रुय ॥ उ ख (भु) ना रु रू दखाहा ॥ वजु
 न प्रमि हा नयाय ॥ उं उं खं मै नं सदनित जिख व वजव न्ना रु
 ३ ॥ थन रुउा ना हा तन वने दहा वनायाय नय न उा हा

पत्रन ॥ उं तत ४ निति तिश्रु यिचि विंदवता रुक्मा म्हा वनद
 कुभ तिताया ॥ ॥ ~~नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥ युवा किदा नवीय म्हा
 गुनम भु नयाय ॥ (ध्यान लंदवी म्हा पिरु ता नि सर्व वर्धनागा
 यिना ॥ वर्या निय वि (म) र्षे भू सुमिया नमिता सुव ॥ य थ न म्हा
 वल व ल र्ग नं म्हा सु सि रु न ता यिना ॥ त थ म्हा ल व न जिना
 ला

मिहिरुनतायिना॥ तथामात्रवर्तुजाहो सर्वसत्त्वार्थकान्ध
त॥ तसमृद्धं नृवं नै संकात्रजं वायुमिज्जन पृथिविस
मेन॥ अस्तयेति हं कात्रज तदुभयसमृद्धं वज्रसयि सुमिदं
जपाकान वज्रयज्जन वितातविराद्य॥ विश्ववज्रवदिका
यैकं जवक यविनामन यभनि सुवतविराद्य॥ ० ॥

पेनां श्रीमुद्रा॥ निताजत॥ अर्चयाय॥ यं सार्धं मुद्रा॥ **नमः**
त॥ यन धाहाडयाड दय क्रिया याय विधिर्था प्रतिष्ठा
याय॥ यनदवता दूतियाय॥ यननि विदिगवनि विद्या॥
आ इति॥ तज्जाडयाग्निमूखन येकात्रन जवरुन पुसा
न मुकवज्र विराद्य॥ उं अरुनय स्वाहा॥ दृग॥ उं अयति द

तत्र जाय स्वाहा ॥ कृष्ण ॥ ॐ वृजा यस्व स्वाहा ॥ सद्यु ॥ ॐ वा वि
 विज्ञाय स्वाहा ॥ अनन्ता ॥ ॐ सर्वपाप दहन वजाय सर्वपाप
 दह स्वाहा ॥ शयनान्ता ॥ ॐ वनपुष्प स्वाहा ॥ ॐ ह्यादि कथन वि
 हिदका दूय ॥ ॐ सर्वसंपद कारति ॥ ॐ अमृतमय नमः ॥ ॥
 पञ्चममृत अङ्गादूय सद्यु श्रुति ता सर्वसतया अङ्गादूय

तिविय ॥ ॥ **धननि, यत्नानि, नानि, नु** ॥ ॥ धिरुत्रा यत्नानि
 र्प ॥ यद्युनिवनि, खानताने, यत्नानि याय ॥ **मन्त्रम** ॥ इदं
 तया अङ्गा, सुवर्णवृत्ततया अङ्गा ॥ ॥ क्रमायन ॥ मन्त्रन विस
 र्जित, संगमनतय, युत्रपजा, यन्त्रिभ, क्रमादिखक, आ
 सिवात, सयादूति ॥ क्रमेण, मन्त्रनयाने, सिन्धुमूदन, श्री

८ नागो धितस्तथा यथा त मनु ध्या ॥ उं सु व ड उं उं मिति स्थाहा ॥ शु क्रि म
 लक्ष्मी यज्ञली यज्ञ नडा ह्या य नाग य दिगु स ग य ॥ ॥ ध्रुः
 न वि कुमात्री यज्ञा ॥ ॥ स मया कैवे ॥ ॥ जल नान वा य ॥ ॥
 ॥ मज नृपं ताम व मृत्त मयं व सदा नृज य वि द्यु वा वि धन्य द
 वं रु व म न व आ दो ग्व म ति व पा नां कु सि गी ग्व पू ज्ञा य च
 वि यु ती व या सर्व म म द र्ज न मृ गं पा नि य य न ना व ष

शुक्र नाग यो

पाव त स्य न र्यं म्म पा ना ८ म पा दा न न ति वि रु व रु सा स्त
 सि ॥ ० ॥ वृत्ति जल हाम दा स न वि वि स मा फ ध ० ॥

ॐ नमो नमो नमो नमो नमः वन्द्य वन्द्य पानय महा गुरु सनाप
तय वन्द्य वन्द्य पानय महा गुरु सनाप ॥ ॥ वी वन्द्य वन्द्य
क सफ गुरु नमो वन्द्य वन्द्य वन्द्य वन्द्य वन्द्य वन्द्य वन्द्य
नक नक नक नक विधन ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

[illegible]

ॐ ॥ ॐ सर्वपापविघ्न उच्चागत मानापदवाचक दैवमनुष्य सुसुना
दिनय नायगानन्यसंग ॥ गदहसर्वापदवसा निकर्त सावचित्वा मेरी
कर्ममूदितायक्षा सर्वसत्त्वसमसा उत्था स्वहृदि स्थितवैका न विः
ऊत्यला ऊत्यनिष्ठा मृता ॥ छानसूनननदमदिगननूलोकधामुः
द्विस्त सर्वदैवननक्षत्रत्यलसि ॥ आकर्षण ॥ नागरवधमगगनदक्ष

शीव नूना ग नाजा सप निवा ना इष्ट ॥ आकर्ष ॥ उँ वजा कृ ग ४ जल्यदि
॥ उँ शीव ज व नूना य व न सुखा नाय प्रर्ध आच मनं पति च्छा हा ॥ ज हुँ व
हं ॥ ॥ पूष्य न्या म ॥ उँ आ ४ वे ना च नि रा व वज व नूना य व ज पूष्य प
ति च्छा हा ॥ उँ वं विजा रा वा य व नूना ग नाजा य व ज पूष्य पति च्छा
हा ॥ उँ आ ४ वज व नूना नाजा य ५ ॥ दधूस ॥ उँ वा पु कि ना ग नाजा य ५

॥ हुँ २
॥ हुँ ३
॥ हुँ ४
॥ हुँ ५
॥ हुँ ६
॥ हुँ ७
॥ हुँ ८
॥ हुँ ९
॥ हुँ १०
॥ हुँ ११
॥ हुँ १२
॥ हुँ १३
॥ हुँ १४
॥ हुँ १५
॥ हुँ १६
॥ हुँ १७
॥ हुँ १८
॥ हुँ १९
॥ हुँ २०
॥ हुँ २१
॥ हुँ २२
॥ हुँ २३
॥ हुँ २४
॥ हुँ २५
॥ हुँ २६
॥ हुँ २७
॥ हुँ २८
॥ हुँ २९
॥ हुँ ३०
॥ हुँ ३१
॥ हुँ ३२
॥ हुँ ३३
॥ हुँ ३४
॥ हुँ ३५
॥ हुँ ३६
॥ हुँ ३७
॥ हुँ ३८
॥ हुँ ३९
॥ हुँ ४०
॥ हुँ ४१
॥ हुँ ४२
॥ हुँ ४३
॥ हुँ ४४
॥ हुँ ४५
॥ हुँ ४६
॥ हुँ ४७
॥ हुँ ४८
॥ हुँ ४९
॥ हुँ ५०
॥ हुँ ५१
॥ हुँ ५२
॥ हुँ ५३
॥ हुँ ५४
॥ हुँ ५५
॥ हुँ ५६
॥ हुँ ५७
॥ हुँ ५८
॥ हुँ ५९
॥ हुँ ६०
॥ हुँ ६१
॥ हुँ ६२
॥ हुँ ६३
॥ हुँ ६४
॥ हुँ ६५
॥ हुँ ६६
॥ हुँ ६७
॥ हुँ ६८
॥ हुँ ६९
॥ हुँ ७०
॥ हुँ ७१
॥ हुँ ७२
॥ हुँ ७३
॥ हुँ ७४
॥ हुँ ७५
॥ हुँ ७६
॥ हुँ ७७
॥ हुँ ७८
॥ हुँ ७९
॥ हुँ ८०
॥ हुँ ८१
॥ हुँ ८२
॥ हुँ ८३
॥ हुँ ८४
॥ हुँ ८५
॥ हुँ ८६
॥ हुँ ८७
॥ हुँ ८८
॥ हुँ ८९
॥ हुँ ९०
॥ हुँ ९१
॥ हुँ ९२
॥ हुँ ९३
॥ हुँ ९४
॥ हुँ ९५
॥ हुँ ९६
॥ हुँ ९७
॥ हुँ ९८
॥ हुँ ९९
॥ हुँ १००

नागनाजाय॥ॐ हूं हूं हूं हूं नागनाजाय॥ॐ नं नं नं नं नागनाः
जाय॥ ॥ गंगा दक्षिण द्वाले स पद्म मधु ॥ॐ नूं नूं नूं नूं नागनाजा
य॥ॐ नूं नूं नूं नूं नागनाजाय॥ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नागनाजाय॥ॐ
वं वं वं वं नागनाजाय॥ॐ हूं हूं हूं हूं नागनाजाय॥ ॥ पद्मिनी द्वावः
पद्मिनी मधु॥ॐ गं गं गं गं नागनाजाय॥ॐ सिं सिं सिं सिं नागनाजाय॥ॐ

ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥ ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥ ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥
 ॥ गणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥ ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥ ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥
 ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥ ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥ ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥ ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥
 ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥ ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥ ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥ ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥
 ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥ ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥ ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥ ॐ श्रीगुरुनारायणाय॥

गवाजाय ॥ ने ॥ उं सं समुद्रनागवाजाय ॥ वा ॥ उं वं वं नमना
जाय ॥ ॐ ॥ पं ला घं लु ॥ वसिष्ठनामवलपुनतत्रपं वलपुनज
नपुष्य जवाय नं गन रुद्रागकनपुष्यनगीधुपुष्य पुमावहिरिष्टिः
तः रुद्रिनववृषं नमामिहं ॥ ॥ उं नमस्कृतं नमामि हूं नमो नम
हूं ॥ सर्ववृषं पूजाय स्वाहा स्मार्तं निश्चिन्तयामि ॥ सर्वपुत्रपतिना

सं आत्मानं निश्चिन्तयामि ॥ संस्तुतं तत्तिष्ठ माहमयस्त्वापं जसर्वः
भद्रतनूयक्रमनास्ति तद्धमयामि तिरितीकान्ध्र निवमनस्य पुन
ताजितानां सर्ववृषवृद्धस्तु तं वृद्धकनपुष्यकं नमो जडिर्मंगलः
कालिपुष्प ॥ तं सर्वरात्र अमाघस्तु दातव्यो वृद्धा माहाज
नि ध्वपतिममयामि ॥ आश्वतथमवजस्रवर्षयामि ॥ पुधपुध

स्वनि कर्न कनू आ उ चि हं धर्म विष्णु छि हू नू पान मृदं सु मयं हं घ जिः
आ न्म जग जन गु नि न म हतं ॥ नि र्या ग या मि नि रि नि ज दा ह त न वू
धाय सा र्ग ग ना य कृ त्वा त्म का र्यं । सु ध मि ना शि म त व द्रु ति आ ज ना थ
य न ॥ त्वं क पू स न ह न व प लि थ हा य ॥ अ हा व ना मू क क च ना ल र यः
वा धि जं ग उ र्थ शि धि या म नू त न वा धि प दं भा हा र्थ दं स्वा मा ग या म्

सु प गु अ या न का । त न स वा धि स म ल पू न घू न य । त थ य का न य वा य
ध म धि आ क र्ण त इ प त्रि लं का ल न ना त्रि वि क र्ण व कू न र्ण लं क र ॥ त
इ प लि वं का न न य व न म्भ ग य म्भ लं क रं । त इ प त्रि लं का न य पृ थि वि
व द्रु न य पि रू का नं वि मू चि क व जालं क रं ॥ त इ प त्रि लं का न य स म्भ
नू व द्रु न त्र म यं क न ग अ र्ध ह ग य म्भ शि त ॥ त इ प त्रि लं का लं नः

कृताम्भल चक्रुः प्रचक्रुः कान चक्रुः तालन रुषितं ॥ हलाध हल कि
दिमिजालं वकृलिकमसिषपयनै ॥ गतमध्वपका नय विना नृत्तं प
प्रमेशी विराय। कणल कया जक कनिका पलिस्यर्थ का पविनृत्तं।
वंकानवीज वनूय वेना चन पविना नृत्तं वनूय नाग बाजा स्वतव
भूमनूयस्य सफरुनादिगं गुहं स्यं दिव वटन वामकलनाग पा

धेवनधन दद्यालिंगीतं नारनध सुदीर्घकाल विविषस्य नवसंशा
रितं ॥ ॥ गत पूर्वदन वाधु किनाग बाजा स्वतव नृत्तं नव रुधनस्य
दिग दक्षिणवलद वामदद्यालिंगीतं वाकान विज विराय ॥ ॥
दक्षिणदन गदक नाग बाजा नकवध्वं यंचरुनाद्युदिगं राकानवी
ज दक्षिण मूरयहका वामदद्यालिंगीत पम्भत ॥ ३ ॥ पश्चिमद

लं क कौट क ताग नाजा ह निग व र्ण स फ र ता च्छा दि तं क का न वी ज
द कि ण ल लि तं वा म ड या लि त रा व य त ॥ ॥ उ रु न द न य म ना ग
ना जा धु म व र्ण वि रु ण च्छा दि तं प का ने वि ज द कि ण क र य वा म ड
या लि नि त रा व य त ॥ ॥ वि दि त ॥ ॥ अ न य र्ण क र द ना ग ना
जा य क र व र्ण द मे रु ण च्छा दि तं क का न वी ज द कि ण क र व ल धः

वा वा म ड या लिं गी त रा व य त ॥ ॥ ने ज र म हा य म ना ग ना जाः
शी त न क र व र्ण शी त द म रु ण च्छा दि तं द कि ण क र व र्ण वा म ड या
न क र म काल वि ज रा व य त ॥ ॥ वा य व द ल्य क र वि क ता ग ना जा
वि श्व व र्ण शी ला द या द म रु ण च्छा दि तं द कि ण न ल क र व र्ण वा म ड या
लिं गी त क का न वि ज वि रा व य त ॥ ॥ अ न द ल ग र य नः

नागनाजा पीतवर्षु नवरुता द्वादितं मकारवीज विहावयनं ॥ ॥
मभ ॥ ॥ पद्मस ॥ आ. पा. निनांजन ॥ ॥ पूर्वयमपतिका से. खा
नक्षाय ॥ ॥ ॐ सुवदनागनाजा सुपतिगजन नागनाजा कृष्णवर्षु
यस्मात् ॥ मभ ॥ ॐ सुवदप्रनागनाजा सुकृष्णवर्षुय ॥ दक्षिण ॥ ॥
ॐ सुवर्षुय नागनाजा नरकवर्षुय ॥ वाम ॥ ॥ ॐ मत्तवाहूनागना

जा श्रीमवर्षुय ॥ वाम ॥ ॥ दक्षिणदिगपतिका ॥ ॥ ॐ मंदिः
जा नागनाजा पीतवर्षुय ॥ मभस ॥ ॥ ॐ मनिप्रनागनाजा कृ
ष्णवर्षुय ॥ दक्षिण ॥ ॥ ॐ सुवदनागनाजा सुवर्षुय ॥ दक्षिण
॥ ॥ ॐ सुवर्षुय नागनाजा नरकवर्षुय ॥ वाम ॥ ॥ ॐ सुवर्षुय नाग
नाजा ह्यामवर्षुय ॥ वाम ॥ ॥ पश्चिमदिगपतिका ॥ ॥ ॐ मंदिः

नागनागावकवर्धुयः॥ मध्यः॥ ॥ॐ॑ सिंधूनागनागा कर्षुवर्धुयः
॥ दक्षिणः॥ ॥ॐ॑ अमृतनागनागा स्वतवर्धुयः॥ दक्षिणः॥ ॥ॐ॑
वक्रनागनागा पीतवर्धुयः॥ वामः॥ ॥ॐ॑ गीतनागनागा अमृतव
र्धुयः॥ वामः॥ ॥ॐ॑ रुद्रनागनागा वक्रिका॥ ॥ॐ॑ मूलिनागनागा
अमृतवर्धुयः॥ मध्यः॥ ॥ॐ॑ अननूनागनागा कर्षुवर्धुयः॥ दक्षिणः॥

॥ ॥ॐ॑ अननूनागनागा स्वतवर्धुयः॥ दक्षिणः॥ ॥ॐ॑ मूलि
नागनागा पीतवर्धुयः॥ वामः॥ ॥ॐ॑ मूलिनागनागा न
कवर्धुयः॥ वामः॥ ॥ विदिगधनिकाकूनः॥ ॥ॐ॑ अननूनाग
नागा स्वतवर्धुयः॥ मध्यः॥ ॥ॐ॑ नदननागनागा पीतवर्धुयः
॥ मध्यः॥ ॥ॐ॑ मूलिनागनागा नकवर्धुयः॥ दक्षिणः॥ ॥

ॐ व ह न नाग नाजा अम र व र्ण ॥ ॐ नम ॥ ॥ पूजा, घं, पु ॥
ज न्ना धि प ति नाग नाजा स्व स्व दे व स्व व हि ता, स त्वा त्वा य स ज नि त्वा ॥
व न्ना धि प ति नाग नाजा ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥
लि, जिह्वा च्छा दि तं, पंच त था ग र, दि ग व र्ण स्व स्व म क्त न था प
नि या व ति ॥ ॥ ॐ व ज धा र ण वि ह्म ॥ ॐ स त्वा व जि ह्म ॥ ॐ व त्वा

व जि ह्म ॥ ॐ ध म्म व जि ह्म ॥ ॐ क म्म व जि ह्म ॥ स म य स त्वा स न स त्वा स
व त्वा लि नं प ण ॥ ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥
त्या दि ॥ स क्त व ज धा र ण ना मा वा र्ण ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥
ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥
ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥
ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥ ॐ नम ॥

हैं मित्र ॥ हों उच्छिष्ट ॥ उच्छिष्टा गद्यवान य वापु कि ॥ हों क ॥ न दान
य पूरुवनि गदा गजलनालिका मूपन दोयन नद कपात्र ॥ हों च क
दया ॥ श्री गनिमानि सग संपयाल ॥ हों नारा ॥ गगन नम द द क
को टक ॥ हों मुख ॥ द्विपन द्विलत पद सभा म न स ग क क ॥ उं कः
क नाद्या पूष्य त सवन स्य म नाद ग क नी स ॥ हों द द य ॥ य म नाः

ग लंका वराजल ॥ हों नारा ॥ माहाय म म ला क ख ना ॥ हों उच्छ
॥ क ख द क वाष्म क विक ॥ हों पाद ॥ क साग यानु ना ग ॥ हों मिखा
॥ मृग्य पख युव न्य म म ना म म म ना ग लि व सो हा मा न्य ना ग हा
य त ॥ जाय ॥ ॥ उं व नू अ य हों वें हों खा हा ॥ ॥ ग ना व लि द याः
त ॥ उं मृ ४ च म न प ति च्छ हा हा ॥ उं व ज व नू अ य ख र खा हि २ः

तिष्ठ २ वध २ अमृक ल्य मक्ति पूरि कनू २ श्रीं आ ग वु २ वषा
पम २ हू २ रुटू २ खा हा ॥ ३ आ ४ हू ४ हा ४ जय विजय न द्यो पनंद पम
ककोटि क वा तु कि गं स्व पा न कनिक २ न क ग क क महा प म ल्य सु प
निवा न ल्य ४ ०० द व लि गंध पूष्य धूप दिप म क न द दान्य हू गं वा गु
न ४ सुप निवा ना ४ श्रीं ०० म व लि गृ क २ खा द रु पी व रु ज ४ हू व

हा ४ स ह फा न् सर्व सत्वा ना ४ मक्ति पूरि कनू हू २ रुटू व ज ध न आ
ह्वा पय निवृत्ता हा ॥ ॥ पं ला श्रीं सु म ॥ ॥ ०० ति ना ग स मा धि
स मा फ म ॥ ॥ ०० ०० ॥